आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date: 28-09-14

सारे कल्प के लिए, हम बच्चों का श्रेष्ठ -ते- श्रेष्ठ भाग्य लिखने वाले, विधाता - बाप और भाग्यविधाता - दादा ने हम बच्चों की जन्म-कुण्डली देखते हुए कहा, हर कल्प की अति समीप आत्माओं का रूप, रेखा और वेला होता है - सदा सर्व स्वरूप के प्राप्ति के खजाने का अनुभव करने वाले, नेचरल निश्चय बुद्धि और बाप को एक सेकेण्ड में देखते ही जान जाने वाले होंगे.

आज बापदादा हम बच्चों के दिव्य जन्म की रुप-रेखा और जन्म की घड़ी अर्थात वेला को देखते हुए कहा अब स्वयं में चेक करो की हम किस प्रकार की आत्मा है? क्योंकि हरेक की वेला और रूप रेखाओं के आधार पर ही उस आत्मा का वर्तमान संगमयुगी जीवन और भविष्य जीवन का आधार है.

- रुप में कोन सा प्रकार?

१. जन्मते ही शक्ति स्वरूप की झलक रही.

२. वियोग से योग की रेखा अर्थात तड़प वा प्यास-रूप रहा.

३. सेवाधारी स्वरूप रहा.

४. आते ही सदा अतीन्द्रिय सुख में सुख रुप रहा.

- रखा में कोन सा प्रकार?

१. वरदानी की रेखा रही.

२. हिम्मत और हुल्लास की रेखा रही.

३. जन्मते ही सहयोग के आधार पर चलने की रेखा रही.

- वेला में कोन सा प्रकार?

१. सेकेण्ड में निश्चय बुद्धि रहे अर्थात नजर से निहाल.

२. सप्ताह कोर्स के बाद रहे अर्थात श्रेष्ठ बोल से निहाल.

३. संशय बुद्धि की युद्ध चलते-चलते निश्चय बुद्धि बने अर्थात सौदागर से सौदे के मुआफिक मूल्य को बार-बार जानने के बाद मरजीवा बने.

४. अभी भी पूरे निश्चय बुद्धि नहीं वा कहे युद्ध चल रही है अर्थात जरा सा प्राप्ति के, स्नेह के, सम्पर्क के, परिवर्तन के आधार पर अभी संशय अभी निश्चय बुद्धि बने.

बापदादा ने आगे कहा, जो हर कल्प की अति समीप आत्मायें वा पदमापदम भाग्यशाली आत्मायें है उनकी रुप, रेखा और वेला क्या होती है?

- रुप कैसा होगा?

जन्मते ही सर्व प्रोपर्टी के अधिकारी होते हैं, ऐसे हर स्वरूप के अनुभूति का अधिकार अनुभव करेंगे. जैसे बीज में सारे वृक्ष का सार समाया हुआ है ऐसे नम्बर वन अर्थात बाप समान समीप आत्मायें वा नम्बर वन वेला वाली आत्मायें सर्व स्वरूप (आदि और अनादि स्वरूप) की प्राप्ति के खज़ाने के आते ही अनुभवी होंगे. ऐसे अनुभव करते है की यही स्वरूप हमारा निजी स्वरूप है.

- रेखा कैसी होगी?

जन्म से ही नेचरल निश्चय बुद्धि की वरदानी रेखा होंगी. निश्चय की रेखा की लाइन अखण्ड होगी. ऐसे पूरे जीवन के अटूट निश्चय की रेखा अन्य आत्माओं को भी स्पष्ट दिखाई देगी. ऐसी रेखा वाले के मस्तक में अर्थात स्मृति में सदा विजय का तिलक नजर आयेगा. ऐसी रेखा वाले, जैसे ब्राह्मणों का भविष्य श्रीकृष्ण के रूप में जन्म से ही ताजधारी दिखाया है, ऐसे जन्म से ही सेवा की जिम्मेदारी के ताजधारी होंगे, सदा ज्ञान रत्नों से खेलने वाले होंगे. सदा याद और खुशी के झुले में झूलते हुए जीवन बिताने वाले होंगे. सदा हर कर्म में वरदान का हाथ अपने ऊपर अनुभव करेंगे. हर दिनचर्या में अपने साथ सर्व सम्बन्धों से समीप और साकार रूप में साथ का अनुभव करेंगे. स्वतः योगी और सहज योगी होंगे.

- वेला कैसी होगी?

सेकेण्ड में पहुँची और बाप की बनी. कल्प पहले के भाग्य के टचिंग के आधार पर जन्मते ही ऐसे अनुभव करेंगे "ब्राह्मण बनना है, नहीं लेकिन ब्राह्मण थे, पहले भी थे और अब भी है", सेकेण्ड में अपना पन अनुभव होगा. देखा और जाना.

यह है नम्बरवन रुप-रेखा और बेला वालों की निशानी. अब अपने आपको चेक करो.

बापदादा ने अन्त में कहा, ऐसे बाप के वरदानों के हाथ को अपने ऊपर अनुभव करने वाले, सदा अपने ऊपर और सर्व के ऊपर रहमदिल, अटूट-अखण्ड निश्चय बुद्धि, अखण्ड योगी, सदा विजय के तिलकधारी, जन्मते ही ताजधारी, ऐसे सदा तख्तनशीन बच्चों को बापदादा का याद-प्यार और नमस्ते.

ॐ शांति.